अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या का कथन

5.3 शोध में प्रयुक्त चर

5.4 शोध के उद्देश्य

5.5 शोध कि परिकल्पनाएँ

5.6 शोध की परिसीमाएँ

5.7 न्यादर्श का चयन

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.9 प्रस्तुत सांख्यिकिय प्रविधियाँ

5.10 शोध निष्कर्ष

5.11 भावी शोध हेतु सुझाव

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

अध्याय पंचम

शोध सारांश,निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

इस अध्याय में लघुशोघ का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गए प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष एवं भविष्य में किए जानेवाले अध्ययन संबंधी सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

5.2 समस्या का कथन :–

''माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

5.3 शोध में प्रयुक्त चर :–

प्रस्तुत अध्ययन में चर निम्नलिखित है :–

1. **स्वतंत्र चर :** **शैक्षणिक चिन्ता,**
   लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) और
   प्रबंधन (शासकीय एवं अशासकीय)।
2. **आश्रित चर :** **शैक्षणिक उपलब्धि।**

5.4 शोध के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता अंतर का अध्ययन करना।

5.5 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

5.6 शोध की परिसीमाएँ :–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल महाराष्ट्र राज्य अहमदनगर जिला और नेवासा तहसील के अंतर्गत ही सीमित है।
2. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 9 वीं तक सीमित होगा।
5. यह अध्ययन दो विद्यालय (शासकीय एवं अशासकीय) तक ही सीमित है।
6. अध्ययन 114 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

5.7 न्यादर्श का चयन :–

प्रस्तुत अध्ययन मे शोध कर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन यादृश्चिक विधि से किया गया है। न्यादर्श महाराष्ट्र राज्य से अहमदनगर जिले के नेवासा तहसील के दो विद्यालय का चयन किया गया है।

- **शोध के न्यादर्श की विशेषताएँ निम्नलिखित है :–**

1. इस शोध कार्य के अंतर्गत दो विद्यालयों का चयन किया गया है। इसमें एक शासकीय और एक अशासकीय विद्यालय है। इन दो विद्यालय से कुल 114 न्यादर्श का चयन किया है।

2. न्यादर्श के रुप मे कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को चुना गया है। जिसमें शासकीय विद्यालय के कुल छात्र 54 है, उसमें 28 छात्र और 26 छात्राएँ है। अशासकीय विद्यालय के कुल छात्र 60 है। उसमें 31 छात्र और 29 छात्राएँ है।

3. सभी विद्यार्थियों की आयु 14 से 16 के बीच है।

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

अनुसंधान में नवीन तथ्य संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करने हेतु परीक्षणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं यंत्रों को उपकरण कहते है।

उपरोक्त बिन्दुओ का ध्यान रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1) शैक्षणिक चिन्ता मापनी–

विद्यालय की शैक्षणिक चिन्ता के लिए प्रो. एस. के. पाल, डॉ. के एस. मिश्रा, डॉ. कल्पलता पाण्डेय की शैक्षणिक चिन्ता मापनी का प्रयोग किया गया । जो 12 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिए है। या कक्षा छठवी से कक्षा बारहवीं तक के बच्चों के लिए है। इसमें कुल 35 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के दो विकल्प है। जिसमें एक "हाँ" एवं दूसरा "नहीं"। "हाँ" के लिए 1 अंक व "नहीं" के लिए 0 अंक निर्धारित किया गया है। परीक्षण के अंको के निर्धारण के आधार पर शैक्षणिक चिन्ता का पता लगाया गया है।

2) शैक्षणिक उपलब्धि :–

शैक्षणिक उपलब्धि के लिए कक्षा 9वीं के लिए कक्षा आठवीं के प्रतिशत अंको की शालेय रेकॉर्ड से जानकारी ली गई है।

5.9 प्रस्तुत सांख्यिकिय प्रविधियाँ :–

संग्रहित प्रदत्तों को संगष्ठीत तथा वर्गीकृत करने के पश्चात आँकडो के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सांख्यिकिय विधियों का प्रयोग किया गया शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता, छात्र एवं छात्राओ की शैक्षणिक चिन्ता के सार्थक अंतर अध्ययन हेतु टी–परिक्षण का प्रयोग किया गया।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय कि शैक्षणिक उपलब्धि, छात्र एवं छात्राओ की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए सार्थक अंतर हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

विद्याथियों की शैक्षणिक चिन्ता एव शैक्षणिक उपलब्धि मे सहसंबध का अध्ययन हेतु कार्ल पियर्सन का गुणक–आघुर्ण सहसंबंध विधि का प्रयोग किया गया।

5.10 शोध निष्कर्ष :–

- **प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है :–**

1. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में ऋणात्मक साधारण सहसम्बन्ध है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

5.11 भावी शोध हेतु सुझाव :–

भविष्य में शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित लघु शोध हेतु निम्नलिखित हो सकते है।

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों कि शैक्षणिक चिन्ता को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।
2. शैक्षणिक चिन्ता एवं अलग–अलग विषय (इंग्लीश, गणित, विज्ञान) के मार्कस् लेकर अध्ययन किया जा सकता है।
3. इंग्लीश मिडियम, हिंदी एवं मराठी मिडियम के विद्यार्थियों कि शैक्षणिक चिन्ता को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।
4. केंन्द्रिय तथा नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि मे संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।
5. न्यादर्श का आकार बडा करके भविष्य मे इस विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है